

M. T. B. COLLEGE, SURAT

Manuscripts Library

No. ^{Ref.}
Ser.

1225

Title: *Vyatipata Vrat*

1225

C	Complete	
:	Vyatipal Vreli	: Title
:	Padmapurane	: Author
:	:	: Editor
:	:	: Year, Vols.
SK	:	: Publisher
1225	:	: Remarks

4/1/51

ॐ

उनिमः श्रागणे शापनमः ॥ १ ॥ धुधिष्ठिर उवाच ॥ ॥ केन व्रतेन
 चीलेन न पश्येद्यमसाधनं परिपृष्ट्वा न हं ब्रह्म न पापं च व्रतं
 मुत्तमं ॥ २ ॥ सर्वाक्रामानवाप्नोति पुत्रपौत्रादिकान्तरां तच्च तं
 ब्रूहि विप्र षीत्यनयागि परां गतिं ॥ ३ ॥ मार्कंडे उवाच ॥ शृणु
 जं त्ववस्थां सिद्धये न पुरा कुरु तं रामानं तेनैराता
 न दत्तं कुरु राय च दुस्विनो ॥ ४ ॥ एकादात्मगित्वा लहय श्रीराजसत्तम
 श्रांतो श्रीविचने रात नृप बवा तव सूकर ॥ ५ ॥ दृग्ध पादं द
 ग्वकाट दृग्ध ग्रीव मुखोदरं दृष्ट्वा तं तादृसं रात नृपांचक्रे
 दया परः ॥ ६ ॥ तेन कर्मविपाकेन सूकरो दृग्धवानयं अहो क
 शुभ हो दुःखं सुकरोणे पलुन्यतो ॥ ७ ॥ अवशमे च जो कर्म
 तं कर्म सुता श्रुतौ रत्न कामन साराजा सुरकरं प्राह सवरं

व्यति

श

दृष्टं ती किमवस्थाने कस्याप्यप्यकर्मणः ॥ मुच्यते केन पुण्येन त
 न्मे ब्रूहि सूकरः ॥ ८ ॥ तवृत्तान् पते वाक्यं निश्चयं नू करी मूहु
 स्मवा मुपाकृतं कर्म प्रकृत्वा चान्वतं नृपः ॥ ९ ॥ वराहवाचा
 शृणु राजन हंपूर्वो जरात सुतो ड वं क्रत्य किं शि कहे शाता
 माध्विप्रो मगध धिपः ॥ १० ॥ ऊरु बुद्धा म मायुक्तो रान्यं निस्सृतं कं
 लता हवारी पुन हं सर्वा न्या लय सकल्पं मही ॥ ११ ॥ शृणु राज
 न हंपूर्वो विश्वस्ववसुखा वहं आशां लवान हा ताह आशि
 तेन श्री किंचितः ॥ १२ ॥ शृता श्वबहु बोधमपु रा ए श्रुति नोदिता
 तथापि पापबुद्धा हं न करी म्या म नो हितां ॥ १३ ॥ आशा पा
 र मनुष्या न ग्रा शास्त्रे विनिगता पापामव कृतं राज नृ किंचि
 सु कृतं कृतं ॥ १४ ॥ एक एतु धिज कश्चित् ब्रता पात गृह ममा आ गती
 याचिते मां च न किंचिद्व्रतवा म हं ॥ १५ ॥ ततश्च कुपितो विप्राम मशापम

प्रादुर्भूतोऽशान्तगातिरिक्तांगोऽक्रोधप्रस्फुरिताधरः ॥ १५ ॥ आशागिहृष्ट
 त्रियावेनमसांगातिपुष्पकपृथुकातयिवचनवागातिरावागिपुष्प
 षोडशहन् ॥ १६ ॥ प्रणयनिजनिदेरीनिनीलिबह्वर्णनिनीतिनीतुसू
 करेणोनिबं प्रसूतिसमवा मुहिः ॥ १७ ॥ प्रसादितोमया विप्र
 पुनरनुकृत्वा नृपा सोतिबंसूकरेवैपिरत्नकाप्यनगा
 मसः ॥ १८ ॥ तेनशायेनरात्रेऽसूकरेवमवाप्रवान् ॥ स्त्रयं ॥ १
 स्त्रीहसंजातो निजे वै विजनेवने ॥ २० ॥ रात्रौ वाचा ॥ केनिबंसूचा ॥ २
 तेपावनमयावहैहसूकरे ॥ येनरात्रौ मया तंतवपापस्य
 संहरयः ॥ २१ ॥ वराहउवाचा ॥ श्रयतांतत्ररात्रेऽनुनिस्पाधितक
 मणिदेहहतेप्रविष्टासिममपापस्यशातये ॥ २२ ॥ व्यतिपातं ह्येत
 त्रयाशननदयात्वा ॥ व्यतीपातव्रतस्यास्य पुण्यदेहान्नोन्नम ॥ २३ ॥
 यथासासुतस्मेहसर्वस्वहितकारिणस्तथावतमिदंराजन

एहलोके परत्र च ॥ २४ ॥ यथेवात्पुहितसर्वसर्वधिवतमोरहेतु
 रद्वं व्रतं तथैवेह सर्वपापं व्यपोह्य ॥ २५ ॥ रातमदुहये दानसहस्रं
 नृदिनद्वया विवावेरातसाहस्य व्यतीपातव्रतकं ॥ २६ ॥ रा
 त्री वाचा ॥ व्यतीपातव्रतं च द्विकयं कार्यं नरोत्तम ॥ कस्मिन्मा
 से गृहीतं वा किं दानं कस्य पूजना ॥ २७ ॥ कति वषाणिकर्तव्यं तत्र
 लोके दृष्टं ॥ २८ ॥ व्यतीपातव्रतस्यास्य उद्यापनविधितया ॥ २९ ॥
 वराहउवाचा ॥ व्यतीपातव्रतविधिं शृणु राजन हितव्रतः ॥
 माद्येवाफालुनिवापि प्रन्यस्मिन्मासि वा लवेत ॥ ३० ॥ व्यती
 पातो हि नेपथिनिप्राप्तव्रतसूत्रमातृभिः पूर्णं दानसहस्रं
 गुरवे पयः ॥ ३१ ॥ एवं द्वितीये दानं व्यतीपातव्रतं तत्र यिवहिसंभृत
 पोयसं चित्रदातव्यं चोत्तरोत्तरं ॥ ३२ ॥ रात्रौ वाचा तस्याचनं मम
 कृद्विस्मरेणैहिसूकरः ॥ ततेतस्मिन्प्रह्वीत्यविपुलं प्राप्य

प्रताष्टाये वाती पातं सचये केरा वं तथा। गधपुण्या कृति धीमे वसुधयस
 सन्निता ॥ ५१ ॥ पोसुवेति वसुके नयत्ता पंत चक्रा वं पायसिने वनि वं
 री किरा लस सन्निता ॥ ५२ ॥ मत्रेण तेन तदवा यदद्यादुधं समाहितः। सफ
 लिसहिराणि शुसु गाधतु सुमि निति ॥ ५३ ॥ गृहाणा ध्वं व्यति पात सोमसु
 र्यसु तत्रातो सप्त जन्म कृतं पापं च तस्य सादात्प्रण रातु ॥ ५४ ॥ हा मसमा र
 नित्य श्वा सोमो धनु मिति सने ता आ कृते निवस्य यो जु दुयात्पात उष्ट
 य ॥ ५५ ॥ अतो देवदि संज्ञा न्या जुहु या नमं च तुष्ट ये। रा मा स मा द्वि जुहु
 या तम मष्टी त्रं रा ता ॥ ५६ ॥ की र वृ ह्म समदि श्वा तम मष्टी त्रं रा ता त
 धिवा न्या हो म श्व चरु हो म स्रग्धिव चा ॥ ५७ ॥ व्य ही त नि स्ति ले हो मां जु
 या द्यो त्रं रा ता तं क्र वि ग्गा र ए ता हा मं क वा स प्रा यि दि सु ॥ ५८ ॥
 व्य ती पा त व्र ता द व च प्य न त स म पि ता च व व न त फ ल द मं म ज न्म
 नि ॥ ५९ ॥ म त स स्त व्य ती पा त सा म सु र्य सु त प्र ता य द ता दि न्म
 त किं चित द दृ ष्य मि हा स्त मे ॥ ६० ॥ के रा वं च व्य ती पा त अ र्थ यि वा

ततो ब्रवीत्ता वार्यं उजायत्यश्वा विज सुप्रसूतयेत ॥ ५१ ॥ आचार्यं पुन चे
 त्यश्वा द विर त स्य प्र पु न ये त आ चा र्यं पु न ये त त्र व स्र जं
 को ल कृ ति शु निः। अं गु लि य क र लि शु न्म ष यि वा स्त वा कि
 ता ॥ ५२ ॥ प य श्व नी च मा म कं स व सां व स्र सं यु ता स्त्र ए शं गी रु
 प्य ख री मु क्ता मा यं ला वि न्म पि ता ॥ ५३ ॥ सु व र्ण ति ल को प्र ता का स्य
 हो दि न स्र यु ता द द्या दि प्रा य मं त्र ए ष वी क्ति न न रा धि पः ॥ ५४ ॥ अ
 जो द रा दि जा न श्वा त्पु न ये द्ध ण दि निः। गो वृ ति न्म मि द्या नि
 श्व ती ष य वि धि व व ति ॥ ५५ ॥ द द्या का स म नि ष्ण ति पा से न स म
 पि णा त्र जो द रा य जो द द्या क क र पु रि ता नृ प ॥ ५६ ॥ वा यो सो ज
 ये प श्वा पा य से न स म पि णा द द्या नि स्तो प यि वा लु लु ब त

मेतस्य सापरे ५१ रं ब्रतं समग्रदिवं गृहीतपर्वजन्मनि। स्वर्गापि वग
दं नृणां मन्तं तफलदं शुभां ह सो को ह किं विषादस्मा सू क वा चक्र
संशयः। तितिव सु को ह यस्मिन् सू कर वा क्य मब्रवीत्। ५२ वृषा ल वृत्तिः
तस्मिन् सवर्तितक लं ते दृष्टा म्पदा एव मुक्ता नृ प प्रेष्टः सू को ह य
फलद हि ॥ १० त ह्य एता न पुण्ये तस्मिन् कारो मुक्त किं विषः।
मुक्त मुक्त र दे हा नृ म वानि र ए नृ पितः ॥ ११ हि कं विमान मा
स्वा य वा क्य वेद सु वा च ह्य। हि जना किं त परं धनं ता पुत व
तो त्र सं १२ त स्म य विनि क मु क व्रत स्या स्प प्र ता वतः। वि श्वा
स न य ता मस्मि न न्य ती पा त व्रा ता त ति ॥ १३ इत्या का स गत सो द र ज
विषया त स द्या तं द द्या वि स्मि तो नृ का य ता पि श्र द्ध ये द तं ॥ १४ ततो
राजा पु र म वा व्रत वि कार य ज ना त। स व श्रु त त वां स्त व्र व्य ता

पात व्रतं शुभं ॥ १५ ततो राजं चिरं क वा दे व दे व स्प च ज्ञाः ह य श्र रः प्रा
प्र वा स्र व त दि क्षो प र म प दं ॥ १६ अ त वं कु ज रा ज द्र व ती पा त व्र तो त मं।
सर्व पा प हं यं कर प र्णा त व्र त मु त्र मं ॥ १७ रं ब्र तं तु यः का य ति श्र द्ध न किं
संम न्त्रितः। को हि जन्म ज तिः पा पिः मु च्यं त ना त्र सं रा य ॥ १८ गो धा श्रि
व पि तृ शु ब्र ह्म हा मु र त ल्य गः। इ त्या हि पा प क र्ता पि व्र ते ना ने व मु
च्य ते ॥ १९ स र्व म ले शु य लु प्यं स व न्ना ने शु य फ लं व्य ति पा त व्रा त ने व
स व न्ना प्रो त्य सं रा य ॥ २० इ वा यु ष स्र था पु त्रा ध न धन त्प त था कृ यं
ह ते व्र ते न रा जे द्र जा य ते ना त्र सं रा य ॥ २१ को हि जन्म स द स्रा णि
को हि जन्म रा ता नि व्र त पु ण्य वि शु धा त्मा वां लु लो क म ही य तो ॥
पु त्र का म न पा ये न ज त स ल त ते सु रा ता न। स्त्री का मे न ज त रा ज न
ल त ते स्त्रि य मु त्र मं ॥ २२ व्य ती पा त व्र त मि दं व्य ति पा त हि ने प वे त सं
प्राप्ता ति सु खं की र्ती म ह तं च स्त्रि य नृ पः ॥ २३ इ ति श्रा प क यु रा णे

अतिपातव्रसंतसंपृथं श्रीप्रागुदाचनतारिणकुपयिदको
नवंशानिषातुडुत्रिषकाकोनेपचपदातुशखवा ॥ एकादश
पदावलीसंप्रतुलवनिपदेः नतुवंशपदावापिनरिधिविश
तिपदि ॥ सध्वेजोतशपिकोष्टीसध्वेचष्टदलस्ततंसितेदुव
शखवाकलावहिनिलेनपुरयेत ॥ इतद्रक्तसितावापिन
रिधियितवनकेः बहुराखलाकलावहिनचपिनप्रपंचसंध
सबतु ॥ ५ ॥ वषेनाप्रवासुहिपंचमीशानिलवितंनहविश्र
नाथः श्रीशमायनमः ॥ ५ ॥ श्री ॥ ५ ॥ श्री ॥ ५ ॥ श्री ॥ ५ ॥
श्रीराम श्री ॥ ५ ॥ ५ ॥ श्री ॥ ५ ॥ श्री ॥ ५ ॥ श्री ॥ ५ ॥